पद्य 4 झाँसी की रानी

सुभद्राकुमारी चौहान (1905-1948) का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था। इन्होंने प्रयाग में ही शिक्षा ग्रहण की। सन् 1921 में असहयोग-आन्दोलन के प्रभाव से इन्होंने शिक्षा अधूरी ही छोड़ दी और ये राजनीति में भाग लेने लगीं। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। काव्य-रचना की ओर इनकी प्रवृत्ति विद्यार्थी-काल से ही थी। अपनी ओजस्वी कविताओं के कारण सुभद्राकुमारी चौहान को भारत भर में लोकप्रियता प्राप्त हुई।

इनकी कविताएँ 'त्रिधारा' और 'मुकुल' में संकलित हैं। भाव की दृष्टि से इनकी कविताओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में राष्ट्र-प्रेम की कविताएँ रखी जा सकती हैं जिनमें इन्होंने असहयोग या स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लेनेवाले वीरों को अपना विषय बनाया है। इनकी 'झाँसी की रानी' कविता जनता में बहुत लोकप्रिय हुई। दूसरे वर्ग के अन्तर्गत वे कविताएँ रखी जा सकती हैं जिनकी प्रेरणा इन्हें अपने पारिवारिक जीवन से प्राप्त हुई। ऐसी कविताओं में कुछ तो पति-प्रेम की भावना से अनुप्राणित हैं और कुछ में सन्तान के प्रति वात्सल्य की सहज एवं मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। इनकी भाषा शैली भावों के अनरूप सरलता और गति लिये हुए है।

झाँसी की रानी

'झाँसी की रानी' कवयित्री सुभद्रकुमारी चौहान की अत्यंत लोकप्रिय और प्रेरणादायी कविता है। इसमें कवयित्री ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की महान बलिदानी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की जीवनगाथा को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। ओज से परिपूर्ण इस वीर रस की कविता में सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण लोकशैली के दर्शन होते हैं। कविता का आरंभ 1857 के भारतव्यापी जागरण के उल्लेख से होता है। अंग्रेज़ों को भारत से खदेड़ने के इस अभियान में 'झाँसी की रानी' के पौरुष का उल्लेख करने के बाद कवयित्री ने उनके बचपन और विवाह का उल्लेख किया है। ओज के साथ करुणा के चित्रण के कारण यह कविता बेजोड़ है। झाँसी के राजा गंगाधर राव निःसंतान ही स्वर्गवासी हो गये और रानी लक्ष्मीबाई को कमजोर समझकर

ईस्ट इंडिया कंपनी ने झाँसी को छल और बल से हड़पने की योजना को साकार रूप दे दिया। परंतु रानी कमजोर नहीं थीं। उन्होंने अत्यंत वीरतापूर्ण युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया। जिस समय भारत के अनेक राज्यों में हमारे अनेक बलिदानी योद्धा अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर रखे थे, उसी समय झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने भी उन्हें नाकों चने चबवा दिए। अनेक मोर्चों पर विजय प्राप्त करती हुई रानी का प्रशिक्षित घोड़ा भी इस संग्राम में स्वर्ग सिधार गया। नए घोड़े के एक स्थान पर अड़ जाने के कारण अंततः अकेली रानी अनेक शत्रुओं के बीच घिर गई और आखिरी साँस तक लड़ती हुई रानी ने वीर गति प्राप्त की। कवयित्री ने झाँसी की रानी को तेज का अवतार और साक्षात् स्वतंत्रता का नारी रूप कहा है। यह कविता स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत थी। आज भी इसका उतना ही महत्व है। राष्ट्रीय चेतना इस कविता में कूट-कूट कर भरी है।ट

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,

गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,

दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में

वह तलवार पुरानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

वीर शिवाजी की गाथाएँ

उसको याद ज़बानी थीं।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,

देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,

नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,

सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,

किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,

तीर चलानेवाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,

रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई, अश्रुपूर्ण रानी ने देखा

झाँसी हुई बिरानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।।

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,

व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,

डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,

राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

शब्दार्थ :-

भृकुटी–भौंहें; गुमी–खोई; फ़िरंगी–विदेशी, अंग्रेज, भारत में यह शब्द अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त; बुंदेले हरबोलों–बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं के यश गाती थी; छबीली–सुंदर; गाथा–कहानी; व्यूह–समूह, युद्ध में सुदृढ़ रक्षा-पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम में खड़ा होना; सुभट–रणकुशल, योद्धा; विरुदावली–विस्तृत कीर्ति गाथा, बड़ाई; मुदित–मोदयुक्त, आनंदित; विकट–भयंकर, दुर्गम, कठिन; घात–छल, चाल।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

1. झाँसी की रानी कविता की कवयित्री का नाम क्या है?
2. बचपन में लक्ष्मीबाई किस प्रकार का खेल खेलती थी?
3. दया चाहनेवाले अंग्रेज निर्दयी कब बने?
4. अंग्रेज़ भारत में किस रूप में आये थे?
5. ब्रिटिश सेना नायक डल्हौसी की नीति क्या थी?
6. किन मुहावरों से मालूम होता है कि अंग्रेज़ी की नीति वामनावतार जैसी थी?

II. निम्नलिखित पद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,